ग्रामीण कर्नाटक में पालक गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा चाह रहे हैं। क्या शैक्षिक संस्थाएँ उनकी आकांक्षा की पूर्ति कर सकती हैं?

एच.एल.सी. की कहानी

हिप्पोकैम्पस लर्निंग सेंटर्स (एच.एल.सी.) ने ग्रामीण कर्नाटक में अपर्याप्त शैक्षिक सुविधाओं वाली आबादियों को कम कीमत पर अच्छी गुणवत्ता वाली प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा प्रदान करने के लिए 2011 में अपने 17 किण्डरगार्टन केन्द्रों की शुरुआत की। 2013 में माण्ड्या तथा दावनगीर जिलों में फैले हुए 104 ग्रामीण केन्द्रों के माध्यम से एच.एल.सी. की पहुँच 3000 बच्चों तक हो गई।

प्रारम्भिक बाल्यावस्था के शैक्षिक प्रयास में 2.5 से 6 साल की उम्र के बच्चों को लक्ष्य करके बनाया गया एक 3–वर्षीय कार्यक्रम होता है। इस कार्यक्रम के द्वारा हासिल किए जाने वाले सीखने के परिणाम स्पष्ट रूप से परिभाषित हैं और वे विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त हैं। इसमें सिखाने–सीखने का अच्छी तरह से संतुलित दृष्टिकोण अपनाने के लिए संज्ञानात्मक, शारीरिक, सामाजिक–भावनात्मक तथा सृजनात्मक जैसे सीखने के सभी क्षेत्रों पर ध्यान दिया गया है।

कार्यक्रम के अन्तर्गत आने वाले बच्चे मुख्य रूप से पहली पीढ़ी के सीखने वाले हैं। माता–पिता दोनों के कृषि कार्य में संलग्न रहने के कारण उनके बच्चे हमारे केन्द्रों पर सीखने और आनन्द लेने की गतिविधियों में 6 घण्टे बिताते हैं। अधिकांश बच्चे रविवारों को भी अपने पालकों से उन्हें केन्द्रों पर पहुँचाने के लिए कहते हैं।

इस प्रारम्भिक शैक्षिक प्रयास को क्रियान्वित करने की यात्रा एच.एल.सी. में शामिल सभी लोगों के लिए सीखने का एक विशद अनुभव रही है। इस प्रक्रिया में हमने अनेक मिथ्या धारणाओं को ध्वस्त किया है।

हमारे अनुभव का सर्वोपरि सबक है कि पालक प्रारम्भिक शैक्षिक प्रयास में खर्च करने के लिए न केवल राजी हैं, बल्कि उत्सुक भी हैं। शुरुआत में इसके बारे में सवाल उठे थे कि पालक एक प्रारम्भिक शैक्षिक कार्यक्रम के लिए खर्च करना चाहेंगे या नहीं। एच.एल.सी. में हमें पता चला कि पालक आँगनवाड़ियों का ऐसा विकल्प चाहते थे जहाँ उनके बच्चों को उस प्रकार की शिक्षा उपलब्ध हो जो उनकी औपचारिक स्कूली पढ़ाई के लिए मजबूत आधार तैयार करने में मदद करे। अनेक पालक यह बात समझते थे कि यदि उनके बच्चे किसी औपचारिक प्रारम्भिक शैक्षिक कार्यक्रम में शामिल हुए बिना ही कक्षा 1 में प्रवेश करेंगे तो वे नुकसान में और पिछड़े रहेंगे।

शुरुआती 17 शिक्षकों के आधार से लगभग 180 शिक्षकों तक पहुँचने के एच.एल.सी. के विकास के दौरान हासिल हुआ दूसरा बड़ा सबक यह है कि स्थानीय समुदाय में से शिक्षकों को खोज लेना, उन्हें प्रशिक्षित करना और काम पर रखना तथा इस प्रक्रिया को लगातार चलाते रहना सम्भव है। इस तरह से स्थानीय समुदाय की एक महिला सशक्त बनती है और उस समुदाय के बच्चों का गुणवत्ता सहित सीखना सुनिश्चित हो जाता है। इससे समुदाय की भागीदारी भी बढ़ती है। आज हम पाते हैं कि पालक अपने बच्चों के सीखने के बारे में पूछताछ करते हैं, पालक–शिक्षक बैठकों में नियमित रूप से शामिल होते हैं और अपने बच्चों के आगे सीखने के लिए जानकारी साझा करते हैं।

कुछ ऐसी सफलताएँ भी हैं जिनको लेकर एच.एल.सी. में काम करने वाले हम सभी लोग उत्साहित हैं। हमारे शिक्षक अब ऐसी बातें नहीं कहते जैसे कि "मंजुनाथ मन्दबुद्धि है" या "निर्मला अँग्रेजी में कमजोर

है"। अब वे पालकों से यह कहते हैं कि "मंजुनाथ गिनती करने में अच्छा है लेकिन जब संख्याओं को लिखने की बात आती है तो उसे ज्यादा अभ्यास करने की जरूरत है"। "निर्मला को कहानियाँ सुनना बहुत भाता है, और वह कहानी के आधार पर पूछे गए सवालों के उत्तर भी देती है, लेकिन उसे अक्षरों को पहचानने में ज्यादा मदद की जरूरत है।" बच्चों के सीखने का आकलन तो किया जाता है, पर वह ज्यादा दोस्ताना और गैर–डरावने वातावरण में किया जाता है।

गाँवों में हमारे शिक्षक जिस तरह अँग्रेजी ध्वनियाँ सिखाने में सफल हुए हैं, वह हमारे लिए एक अन्य सुखद परिणाम रहा है। आज एच. एल.सी. केन्द्रों पर उच्च किण्डरगार्टन कक्षाओं के बच्चे अक्षरों की आवाजों पर जोर देते हुए बोलकर पढ़ते हैं। जिस ढंग से बच्चों ने सरल वाक्यों को पढ़ना शुरू कर दिया है, उससे शिक्षकों के साथ ही उनके पालक भी आनन्दित हैं। बच्चों को पढ़ना सिखाने के लिए ध्वनियों के ज्ञान का उपयोग करने का निर्णय लेने के लिए हमने दो वर्ष का समय विचार–विमर्श करने में लगाया। दो माह की छोटी अवधि का प्रायोगिक परीक्षण किया। इसमें पहली चुनौती तो स्वयं शिक्षकों के रूप में सामने आई। ध्वनियों की जानकारी का विचार उनके लिए सर्वथा अनजाना था। उन प्रशिक्षण सत्रों में, जिनमें वे अक्षरों की ध्वनियों का अभ्यास करते थे, अकसर उनकी घबराहट भरी हँसी सुनाई देती थी। कक्षाओं में जितनी तेजी से बच्चों ने इस अवधारणा को अपना लिया उससे शिक्षकों को बहुत आश्चर्य हुआ। फिर पीछे मुड़कर नहीं देखना पड़ा। आज शिक्षक ध्वनि–आधारित पद्धति का उपयोग करने में गर्व अनुभव करते हैं और उसके बारे में पालकों से भी चर्चा करते हैं।

एच.एल.सी. केन्द्रों पर शारीरिक स्वच्छता सम्बन्धी अच्छी आदतों पर जोर देने का प्रभाव बच्चों के माध्यम से अन्य लोगों तक भी पड़ा है। पालक हमारे पास आकर बताते हैं कि उनका बेटा या बेटी इसका आग्रह करते हैं कि सभी लोग शौच के बाद अपने हाथ अच्छी तरह से धोएँ। कुछ समुदायों ने (यदि उनके गाँव में कोई शौचालय नहीं है) तो हमसे सम्पर्क करके वहाँ शौचालयों को निर्मित करने की इच्छा जताई है।

जैसी कि किसी भी बड़े प्रयास में अपेक्षा की जा सकती है, ऐसी कई चुनौतियाँ रही हैं जिनका हमें लगातार सामना करना पड़ा है। अधिकांश गाँवों में (और यहाँ तक कि शहरों में भी) सीखने का मतलब लिखना समझा जाता है। पालक लिखित कार्य को ही सीखने का प्रमाण मानते हैं। बिना समझे लिखने की इस प्रथा, या कुप्रथा, में न केवल प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ई.सी.ई.) के स्तर पर, बल्कि सभी स्कूलों में प्राथमिक स्तर पर भी सुधार किए जाने की जरूरत है। एच.एल.सी. में हर अकादमिक सत्र के आरम्भ में पालकों के साथ इसके बारे में चर्चाएँ करके हमने इस धारणा को सुधारने का प्रयास किया है। हालाँकि इसका प्रभाव तो पड़ता है, पर पालक फिर भी अपनी शंकाएँ लेकर तब हमारे पास आते हैं, जब वे पड़ोस के किसी कान्वेंट स्कूल के बच्चे को पहले ही महीने में ए से जैड तक अक्षरों को लिखता हुआ देखते हैं। प्रारम्भिक वर्षों के शैक्षिक प्रयासों में सिखाने–सीखने की हानिकारक पद्धतियों के इस्तेमाल के बारे में जानकारी देने के लिए व्यापक स्तर पर अभियान चलाए जाने की जरूरत है।

गायत्री आर. पी. हिप्पोकैम्पस लर्निंग सेंटर्स gayatri_rp@hippocampus.in

अनुवाद : भरत त्रिपाठी

सेसमी वर्कशॉप इण्डिया

सेसमी वर्कशॉप इण्डिया वह संस्था है जो गली गली सिम सिम तथा अन्य कार्यक्रमों का निर्माण करती है और जो बच्चों को उनकी सर्वोच्च सम्भावना तक पहुँचने और स्कूल तथा जीवन के लिए तैयार होने में मदद करने के लिए संचार माध्यमों की शक्ति का उपयोग करती है। इस संस्था के पेशेवर लोग 0 से 8 साल की उम्र के बच्चों के लिए उच्च गुणवत्ता की रोचक सामग्री को विकसित करके उसे टेलीविजन, रेडियो, सामुदायिक रेडियो, छपी हुई सामग्री, डिजिटल तथा सामुदायिक प्रसार आदि सभी संचार माध्यमों के द्वारा वितरित करते हैं। उनकी सामग्री का लक्ष्य, भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विविधता को आनन्दपूर्वक सराहते हुए, अकादमिक तथा जीवन कौशलों को हासिल करने में छोटे भारतीय बच्चों की सहायता करना है, ताकि समग्र रूप से उनके संज्ञानात्मक, सामाजिक–भावनात्मक तथा शारीरिक विकास को बढ़ावा मिले। उनकी टेलीविजन शृंखला, गली गली सिम सिम, के 2006 में राष्ट्रीय केबल चैनलों पोगो और कार्टून नेटवर्क पर तथा राष्ट्रीय सार्वजनिक प्रसारक दूरदर्शन पर आरम्भ होने के बाद से इसे हर साल एक करोड़ बच्चों के द्वारा देखा गया है। इसके शैक्षणिक सन्देश ऑल इण्डिया रेडियो तथा सामुदायिक रेडियो स्टेशनों, व्यापक सामुदायिक प्रसार संस्थाओं, तथा सैल फोन और इंटरनेट जैसे नए और उभरते हुए संचार माध्यमों के द्वारा प्रसारित किए जाते हैं। हाल ही में, सेसमी स्ट्रीट पूर्व–स्कूलों को प्रारम्भ करके उन्होंने स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश किया है। इन स्कूलों की पाठ्यचर्या तथा पद्धति प्रॉजेक्ट–आधारित स्वयं करके सीखने के तरीके को सृजनात्मक दृष्टिकोणों से जोड़ती है जिससे समीक्षात्मक सोच और समस्याओं को हल करने की क्षमता का पोषण हो सके तथा जीवनपर्यन्त सीखने को बढ़ावा देने वाला आधार निर्मित हो सके।

अधिक जानकारी के लिए देखें :
http://www.sesameworkshopindia.org/ or
www.galligallisimsim.com

अनुवाद : सत्येन्द्र त्रिपाठी